# स्नेह के सूचक पावन रक्षा-बन्धन

संगमयुग का यह यादगार पावन पर्व, हम सबको भाई-बहन के सच्चे स्नेह के सूत्र में बांध सम्पूर्ण पावन बनने की शुभ प्रेरणाएं देता है। राखी का कंगन भी हम सबको सदा एक की याद और एक के ही स्नेह के सूत्र में बंध कर बेहद विश्व की सेवा करने का यादगार पर्व है। इसलिए आओ हम सभी बाह्मण बच्चे रक्षा-बन्धन के इस पावन पर्व पर, बाप-दादा के फरमान को साकार करने और बाप-दादा को विश्व के सामने प्रत्यक्ष करने के लिए स्वयं से यह प्रतिज्ञा करें :-

- मुख से सदा मधुर बोल, सुख देने वाले बोल ही बोलेगें।
- सुनी-सुनाई बातों से अपने मन की स्थिति को विचलित नहीं करेंगे।
- हर बोल सोच-समझकर बोलेंगे, कभी भी अशुद्ध अप-शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे।
- अपनी की हुई गलती को महसुस कर परिवर्तन करेंगे, दूसरों को दोषी नहीं बनायेंगे।
- नम्रता का कवच पहनकर नम्रचित बनकर चलेंगे, देह-अहंकार में नहीं आयेंगे।
- मास्टर स्नेह का सागर बन कर सबको स्नेह देंगे, स्नेह लेंगे।
- अन्तर्मुखता से अपने मुख को बन्द कर क्रोध को समाप्त करेंगे।
- जोश में आना भी मन का रोना है, इसलिए मन से भी क्रोध नहीं करेंगे।
- हर्षित मुख रहकर सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न स्थिति का अनुभव करेंगे।
- पास्ट को पास्ट कर शुभ-भावना, शुभ-कामना से सम्पन्न बनेंगे।
- हर आत्मा के पार्ट को साक्षी होकर देखेंगे, कभी किसी के पार्ट से रीस नहीं करेंगे।
- अभिमान का त्याग कर सर्व को सम्मान देंगे और स्वमान में रहेंगे।
- परोपकार की भावना से अपकारियों पर भी उपकार करेंगे। निंदक को भी अपना मित्र मानेंगे।
- निःस्वार्थ वृत्ति से सेवा करेंगे, मान-शान की इच्छा नहीं रखेंगे।
- बालक और मालिक पन के बैलेन्स से अपनी स्थिति को एकरस बनायेंगे।

सबके साथ एडजेस्ट होकर चलेंगे, न डिस्टर्व होंगे न डिस्टर्व करेंगे।

सबके प्रति गुण ग्राहक बनेंगे, अवगुणों का वर्णन-चिंतन नहीं करेंगे।

सत्यता की सभ्यता को अपनायेंगे जिद्द वा सिद्ध नहीं करेंगे।

कभी भी मुड ऑफ करके पढ़ाई से वा संगठन से किनारा नहीं करेंगे।

हर एक के पार्ट को साक्षी होकर देखते हुए सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे।

त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहकर धैर्यवत होकर हर कर्म करेंगे, चिड़चिड़ेपन में नहीं आयेंगे।

स्वयं को शान्ति दूत समझकर सबको शान्ति का दान देंगे और शान्त रहेंगे।

साइलेन्स की शक्ति द्वारा हिंसक वृत्ति वालों को भी अहिंसक बनायेंगे।

किसी की भी कनेक्शन एक बाप से ठीक रखेंगे।

अपने रूहानियत के रूहाव में रहेंगे कभी रोब में नहीं आयेंगे।

स्वयं को बदलेंगे, किसी से बदला लेने की भावना नहीं रखेंगे।

क्षमाशिल और रहमदिल बन हर एक को क्षमा करेंगे, सामना नहीं करेंगे।

निर्माणचित्त बन कर जिम्मेवारी का ताज धारण करेंगे, दिलशिकस्त नहीं बनेंगे।

निंदा-स्तुति, मान-अपमान में समान रहकर ज्ञानी तू आत्मा बन सबूत देंगे ओर सपूत बनेंगे।

उदारता की शक्ति से क्रोध रूपी महाशत्रु पर सम्पुर्ण विजयी बनेंगे।

-: ओम् शान्ति :-